आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2320 • उदयपुर, शनिवार 01 मई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

लाल ग्रह से आएंगे चट्टानों के नमूने

पृथ्वी से बाहर की दुनिया के बारे में जानना मनुष्य के लिए सदा से जिज्ञासा का विषय रहा है। सतत अंतरिक्ष अध्ययनों से सौरमंडल के ग्रहों के बारें में काफी कुछ जानकारी प्राप्त की जा चुकी है। मगर उनमें से कहीं भी जीवन की संभावना नजर नहीं आई है। कुछ साल पहले जब मगंल ग्रह पर जल स्रोतों जैसी तस्वीरें सामने आई तो वैज्ञानिकों की खोज की दिशा बदल गई। भरोसा पैदा हुआ कि अगर कभी वहां जल रहा होगा, तो जीवन भी जरूर रहा होगा। वह जीवन कैसा था, वहां किस प्रकार के जीव–जंतु वनस्पतियां आदि पाई जाती थी। फिर वहां जीवन समाप्त हो गया, तो उसकी वजह क्या थी? उन सब तथ्यों के बारे में पता लगाने को लेकर वैज्ञानिक उत्सुक हुए। इसी के चलते विभिन्न देशो नें अपना ध्यान चन्द्र अभियान की अपेक्षा मंगल अभियान की तरफ केन्द्रित करना शुरू कर दिया। भारत ने भी मंगल मिशन शुरू किया था, पर उसमें अपेक्षित कामयाबी नहीं मिल पाई। चूंकि पृथ्वी भी सौरमंडल की एक इकाई है, जब दूसरे ग्रहों पर कोई हलचल होती है, तो उसका प्रभाव इस पर भी पड़ता है। चूंकि जीवन सिर्फ पृथ्वी पर है, इसलिए मानव जीवन की सुरक्षा की दृष्टि से अंतरिक्ष के दूसरे ग्रहों पर चल रही हलचल पर भी नजर रखना बहुत जरूरी है।

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा का पर्सीवरेंस रोवर मंगल अर्थात् लाल ग्रह की सतह पर सुरक्षित उतर गया और धरती पर अनमोल वीडियो भेजने शुरू कर दिए। रोवर द्वारा बनाए गए उच्च गुणवत्ता के वीडियो से कुछ तस्वीरे निकाली गई हैं, जिनमें से मंगल की सतह दिखाई पड़ रही है। वैज्ञानिकों ने सतह का अध्ययन शुरू कर दिया है। यह जानने की कोशिश होगी कि क्या मंगल पर कभी जीवन था। यह खोज दिलचस्प ही नहीं, बल्कि इंसानों के लिए उपयोगी भी है। मंगल को सही प्रकार से जानने के बाद ही अगले ग्रहों की खोज में ज्यादा तेजी आएगी। नासा के ताजा अभियान की शुरूआत 30 जुलाई को हुई थी। अमेरिका के लोरिडा में कैप केनावेरल अंतरिक्ष सेंटर से मंगल की और यात्रा करते हुए यान ने 47.2 करोड़ किलोमीटर की दूरी तय की है। उसके रोवर का मंगल की सतह पर सही ढंग से उतरना यकीनन एक बहुत बड़ी वैज्ञानिक कामयाबी है। यह मंगल पर भेजा गया अब तक का सबसे बड़ा रोवर है और इसकी तकनीक क्षमता–दक्षता भी बहुत ज्यादा है।

नासा की यह सफलता भारत के लिए भी एक बड़ी खुशखबरी है, क्योंकि नासा पर रोवर उतारने में सबसे प्रमुख भूमिका भारतीय मूल की अमेरिकी वैज्ञानिक स्वाति मोहन की है। यह परिवार के साथ एक साल की उम्र में ही अमेरिका चली गई थी और यह उनकी प्रतिभा का ही प्रमाण है कि नासा जैसे अंतरिक्ष विज्ञान संस्थान ने उन्हें रोवर की कमान सौंपी।

इस अभियान से भारत को काफी उम्मीदें हैं। 30 सितम्बर 2014 को भारतीय अंतरिक्ष संगठन (इसरो) और अमेरिकी नासा के बीच एक समझौता हुआ था। जिसमें धरती और मंगल ग्रह के मिशन साथ में मिलकर करने की बात हुई।

सात माह में मंगल की तीसरी यात्रा

सात महीने में मंगल की यह तीसरी यात्रा है। इससे पहले यूएई और चीन के यान वहां पहुंचे थे। 1970 के दशक के बाद से यह नासा का नौवां मंगल अभियान है। चीन ने तियानवेन–1 पिछले साल 23 जुलाई को रवाना किया था। यह 10 फरवरी को मंगल की कक्षा में पहुंचा। वहीं यूएई का मंगल मिशन होप भी इस महीने प्रवेश कर गया है।

लाल किले में दिखेगी टीपू की तलवार, औरंगजेब का कवच

आजादी की 75वीं सालगिरह पर लाल किले में देश के ऐतिहासिक हथियारों की झलक देखने को मिलेगी। नेशनल म्युजियम ने अपने हथियार और आर्मरी सेक्शन को 17वीं शताब्दी के ऐतिहासिक लाल किले में शिफ्ट करने का फैसला किया है। इनमें अलग–अलग तरह के हथियारों के साथ करीब 600 ऐतिहासिक चीजें शामिल हैं। फिलहाल प्रयोगशाला में ऐतिहासिक चीजों की सफाई, टेगिंग और पेकिंग का काम जारी है।

नेशनल म्यूजियम बैरक में दो अन्य रिपॉजिटरी स्थापित करने की योजना बना रहा है। इनमें से एक जम्मू–कश्मीर के इतिहास और दूसरी 1857 से 1947 तक के स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित होगी।

16वीं–19वीं शताब्दी तक के हथियार

नेशनल म्युजियम से लाल किले में लाए जाने वाले हथियारों में 16वीं से 19वीं शताब्दी तक के हथियार शामिल हैं। इनमें राजपूतों और मुगलों के हथियारों के साथ टीपू सुल्तान की तलवार तथा औरंगजेब का कवच प्रमुख है। शील्ड, स्पीयर्स और सिर की सुरक्षा के लिए पहने जाने वाले कई दूसरे कवच भी होंगे।

तीन हजार साल के हथियारों का इतिहास

नेशनल म्युजियम की तरफ से विशेष प्रदर्शनी में देश में हथियारों का तीन हजार साल का इतिहास दर्शाया जाएगा। लाल किले में यह म्युजियम सीएमपी बैरक की दूसरी मंजिल पर होगा। यह करीब 50 हजार वर्ग फीट में फैला हुआ है।

सेवा–जगत्
सेवा से सतत्, आपका नारायण सेवा संस्थान

उमेश की दो साल से रुकी जिन्दगी शुरु

चोरी–चोरा, गोरखपुर (यू.पी.) निवासी 27 वर्षीय उमेश कुमार राजभर करीब 2 साल पहले एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए। दुर्घटना का जिक्र करते हुए वे रुंधे गले से बताते हैं कि मां–पिता की मौत तो मेरे लड़कपन में हो गई थी। खैर ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। भाभी और भाई ने मुझे बड़ा कर किया। परिवार की मदद के लिए लोहे के कारखाने में मजदूरी करने लगा। घरवालों से मिलने के लिए गांव जा रहा था कि चलती ट्रेन में चढ़ते वक्त गिर पड़ा। मुझे तो कुछ सुध नहीं रही बांया पांव पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। किसी ने मुझे हॉस्पीटल पहुंचाया। वहां करीब 1 माह तक इलाज चला जिसके दौरान घुटने के नीचे से पांव काटना पड़ा। कल तक दौड़ रही जिन्दगी एकाएक थम गई।

बेड पर बैठे रहने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकता। कुछ दिन पहले किसी परिचित ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी दी तो में उदयपुर पहुंचा। संस्थान की प्रोस्थेटिक टीम ने कटे पांव का मेजरमेंट लिया और कृत्रिम पांव लगा दिया। अब मैं अपने पांवों पर चलने लगा हूं। मै इतना खुश हूं कि कह नहीं पा रहा . ... बस इतना ही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी रूक गई थी जिसे फिर से शुरू करने वाली नारायण सेवा संस्थान और इनके डॉक्टर्स व टीम को बहुत धन्यवाद... आपने कृत्रिम अंग का मुझे उपहार दिया है ... मैं इसके लिए बहुत आभारी रहूंगा....

आदरणीय श्री प्रशांत जी अग्रवाल को श्रीवैश्य रत्न सम्मान

नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल को हरिद्वार के ज्वालापुर स्थित अग्रवाल समाज सम्मेलन में श्रीवैश्य रत्न सम्मान प्रदान किया गया। इस मौके पर उन्होंने संस्थाओं की निःशुल्क सेवा प्रकल्पों एवं हरिद्वार मेला परिसर में दिव्यांगजन के लिए लगाए गए ऑपरेशन एवं कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) शिविर की जानकारी दी।

इससे पूर्व अग्रवाल ने पतंजलि योग पीठ के संस्थापक योग गुरु स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण जी, परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद जी सरस्वती से भी भेंट की। भेंट के दौरान वंदना जी अग्रवाल और पलक जी अग्रवाल भी मौजूद रहे।

परम श्रेय का अधिकारी

जो जिस स्थिति में है, अपने लिए ऐसा क्षेत्र चुन सकता है कि कुछ करने का अवसर मिले। गौड़ देश में एक भावनाशील श्रमिक रहता था। जितना कमाता, उतना गुजारे में ही खर्च हो जाता।

दान– पुण्य के लिये कुछ न बचता। इससे वह दुःखी रहने लगा। मन –ही– मन स्वयं को ही कोसता कि बिना परमार्थ किए परलोक में कैसे सद्गति मिलेगी? अपनी व्यथा उसने क्षेत्र के निवासी मद्रक संत को सुनाई।

उन्होंने उसे सलाह देते हुए कहा –''इस क्षेत्र में बहुत से तालाब हैं, पर वे अब समतल हो गए हैं। उनमें गहराई न रहने से पानी भी नहीं टिकता और प्यासे पशु– पक्षी अपनी प्यास तालाबों से बुझाने के लिए दूर– दूर तक जाते हैं। मनुष्यों को भी कम कष्ट नहीं होता। तुम इन तालाबों को जहाँ भी पाओ वहाँ श्रमदान कर तालाबों का जीर्णोदार करते रहो। जिस प्रकार नए मंदिर बनवाने की अपेक्षा पुरानों का जीर्णोदार श्रेष्ठ माना जाता है, बच्चे उत्पन्न करने की अपेक्षा रोगियों को सेवा प्रदान करना श्रेयस्कर है, उसी प्रकार तुम श्रमदान के आधार पर तालाबों का जीर्णोद्धार करो और उन्हीं के समीप वृक्ष भी लगाओ।

किसान श्रमिक के पास अपनी श्रम– संपदा प्रचुर थी, उसी के वह निर्वाह के अतिरिक्त परमार्थ भी अर्जित करने लग गया और संत के लिए निर्देश से परम श्रेय का अधिकारी बना।

बचपन का सबक

एक बार छह साल का नन्हा सा बच्चा अपने साथियों के साथ बगीचे में फूल तोड़ने के लिए गया। उसके दोस्तों ने बहुत सारे फूल तोड़कर अपनी झोलियों में भर लिए। नन्हा बालक छोटा और कमजोर होने के कारण पिछड़ गया और उसने पहला फूल तोड़ा ही था कि बगीचे का माली आ गया।

दूसरे सारे लड़के बगीचे से भागने में सफल हुए जबकि नन्हा बच्चा माली की पकड़ में आ गया। बहुत सारे फूलों के टूटने, बगीचे का नुकसान होने और लड़कों के भाग जाने की वजह से माली काफी गुस्से में था। इसलिए अपना सारा गुस्सा उसने अपने हाथ में आए नन्हें बच्चे पर निकाला। पहले उसने बच्चे को काफी फटकारा और जब माली का मन इससे भी नहीं भरा तो उसने छोटे बच्चे को पीट दिया। तब बच्चे ने माली से कहा कि आप मुझे इसलिए फटकार रहे हो, क्योंकि मेरे पिता नहीं हैं।

इतना सुनते ही माली का क्रोध पूरी तरह खत्म हो गया और उसने नन्हे बच्चे से कहा कि ' बेटे मैंने तुमको पीटा तो है, लेकिन इसलिए नहीं कि तुम्हारे पिता नहीं हैं। मेरा गुस्सा कुछ ज्यादा हो गया था, लेकिन पिता के नहीं होने से तुम्हारी जिम्मेदारी पहले से ज्यादा हो गई है इसलिए इस हालत में सही–गलत का फैसला तुम्हें खुद ही करना है। पिता होते तो वह शायद तुम्हारा मार्गदर्शन करते। '

माली की मार खाकर तो उस बच्चे ने एक आंसू भी नहीं बहाया, लेकिन यह सुनकर वह बच्चा बिलखकर रो पड़ा। माली की बात बच्चे के दिल में घर कर गई और उसने इस सबक को हमेशा याद रखा। बच्चे ने उसी दिन निश्चय कर लिया कि वह आज से कोई ऐसा काम नहीं करेगा जिससे किसी को नुकसान हो।

बड़ा होने पर वह बालक भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़ा और भारत को आजादी मिलने के कुछ साल बाद उसने भारत के प्रधानमंत्री पद को सुशोभित किया। इस बालक का नाम था लालबहादुर शास्त्री।

दृढ़ संकल्पवान बनें

एक तीक्ष्ण बुद्धि वाला विद्यार्थी साधारण वस्त्र धारण करता था और कई बार केवल धोती में ही विद्यालय चला जाता था। एक दिन उसके आचार्य ने उससे पूछा, बेटा इतनी सर्दी में भी तुमने ठीक से कपड़े नहीं पहन रखे हैं इस शीत के प्रकोप से तुम बीमार हो जाओगे। इतनी कृपणता (कंजूसी) ठीक नहीं है। उस युवा ने विनम्रता से कहा – गुरुदेव मेरे पास जो थोड़ा सा धन है, उससे रात्रि में अध्ययन के लिए केवल तेल ही खरीद पाता हूं। यदि मैं यह राशि भी कपड़ों पर खर्च कर दूं तो मेरी पढ़ाई रुक जायेगी। अन्य वस्तुओं के बिना मेरा काम चल जाएगा, परन्तु अध्ययन के बिना मेरा जीवन ही निष्फल हो जाएगा। उसकी बात सुनकर गुरुदेव मौन हो गए। उनका मन व्यथित हो उठा। उनके मन में केवल एक ही भाव उठ रहा था जिनके पास सहज में मिलने वाले साधन हैं वे पढ़ाई में रूचि नहीं रखते। परन्तु जिनके पास जरूरी वस्तुओं का भी अभाव है वे अध्ययन के इच्छुक हैं। यह कैसी स्थिति है?

समय तेजी से बीतता गया और जब वह मेधावी छात्र अपनी पढ़ाई समाप्त करके गुरु से विदा लेने गया तो उन्होंने उसे प्रोत्साहित करते हुए कहा वत्स! मेरी बहुत इच्छा है कि तुम जैसे विद्वान तरुण देश की बागडोर संभालें। तुम इंडियन सिविल सर्विस के लिए आवेदन भर के कोई उचित पद ग्रहण कर लो। तरुण ने पुनः विनम्र उत्तर दिया, गुरुदेव! मुझे खेद है कि मैं आपकी इस आज्ञा को मानने में असमर्थ हूँ। मैं भारतीय शास्त्रों का गहन अध्ययन करना चाहता हूँ, ताकि मैं इस अनमोल ज्ञान को मुक्तहस्त से सम्पूर्ण विश्व के मानवों में बांट सकूँ। आचार्य ने भावपूर्ण हो अपने आशीर्वचन देते हुए कह कि ईश्वर तुम्हारी अभिलाषा सफल करे। यह मेधावी छात्र लाखों को मार्गदर्शन देने में सक्षम हुआ और स्वामी रामतीर्थ के नाम से विख्यात हुआ।

आपके अपने संस्थान की शाखाएं

पाली/जोधपुर (राज.)
श्री कान्तिलाल मूथा,मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़ (राज.)

भीलवाड़ा(राज.)
श्री शिव नारायण अग्रवाल,मो. 09829769960
C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़,
भीलवाड़ा-311001 (राज.)

चुरु(राज.)
श्री गोरधन शर्मा,मो. 9588913301,गाँव व पोस्ट
- झोथड़ा, त. तारानगर, चुरू-331304 (राज.)

सुमेरपुर (राज.)
श्री गणेश मल विश्वकर्मा,मो. 09549503282
अंचल फाउण्डरी, स्टेशन रोड़, सुमेरपुर, पाली

बहरोड़(राज.)
डॉ. अरविन्द गोस्वामी,मो. 9887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने
बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला,मो. 8952859514,
लेडिज फैशन पॉईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने
यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर (राज.)

अलवर (राज.)
श्री आर.एस. वर्मा,मो.-09024749075,
के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया,बाग अलवर (राज.)

जयपुर (राज.)
श्री नन्द किशोर बत्रा,मो. 09828242497
5-C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़,
झोटवाड़ा, जयपुर 302012 (राजस्थान)

अजमेर(राज.)
श्री सत्य नारायण कुमावत
मो. 9166190962,कुमावत कॉलोनी,
आर्य समाज के पीछे, मदनगंज,किशनगढ़,
जिला अजमेर (राज.)

बूंदी(राज.)
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,मो. 9829960811,
ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी
चित्तौड़ रोड़, बून्दी (राज.)

मन्दसौर (म.प्र.)
श्री मनोहर सिंह देवड़ा
मो. 9753810864,म.नं. 153, वार्ड नं. 6,
ग्राम-गुराड़िया,पोस्ट-गुराड़ियादेदा,
जिला - मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

भोपाल(म.प्र.)
श्री विष्णु शरण सक्सेना,मो. 09425050136
A-3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर
रेल्वे क्रॉसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ,
होशंगाबाद रोड़ जिला - भोपाल (म.प्र.)

कैथल (हरियाणा)
डॉ. विवेक गर्ग,मो. 9996990807,गर्ग
मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर
पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

सिरसा(हरियाणा)
श्री सतीश मेहता मो. 9728300055
म.न.-705, से.-20,पार्ट-द्वितीय,सिरसा, हरि.

जुलाना मण्डी(हरियाणा)
श्रीराम निवास जिन्दल,
श्री मनोज जिन्दल मो. 9813707878,108
अनाज मण्डी, जुलाना,जींद (हरियाणा)

पलवल(हरियाणा)
श्री वीर सिंह चौहान मो.9991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी,
सेक्टर-14, पलवल (हरि.)

नरवाना(हरियाणा)
श्री धर्मपाल गर्ग,मो.-09466442702,
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग मो.-9728941014
165-हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी नरवाना,जीन्द

फरीदाबाद(हरियाणा)
श्री नवल किशोर गुप्ता मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12,
एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल (हरियाणा)
श्री सतीश शर्मा,मो. 09416121278
म.नं. 886, सेक्टर-7, अरबन एस्टेट
करनाल (हरियाणा)

अम्बाला केन्ट (हरियाणा)
श्री मुकुट बिहारी कपूर ,मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला
केन्ट, अम्बाला केन्ट-133001(हरियाणा)

कैथल(हरियाणा)
श्री सतपाल मंगला,मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

उज्जैन (म.प्र.)
श्री गुलाब सिंह चौहान
मो. 09981738805
गाँव एवं पोस्ट - इन्गोरिया,
जिला - उज्जैन (म.प्र.) 456222

रतलाम (म.प्र.)
श्री चन्द पाल गुप्ता
मो. 9752492233,मकान नं. 344,
काटजूनगर, रतलाम (म.प्र.)

जबलपुर(म.प्र.)
श्री आर. के. तिवारी,मो. 9826648133
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन
सिटी,माधोतल, जिला - जबलपुर (म.प्र.)

आकोला (महाराष्ट्र)
श्री हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला (महाराष्ट्र)

परभणी (महाराष्ट्र)
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

नांदेड़(महाराष्ट्र)
श्री विनोद लिंबा राठोड,07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम,मु. पो. सारखानी,
किनवट, जिला - नांदेड़, महाराष्ट्र

पाचोरा (महाराष्ट्र)
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

मुम्बई(महाराष्ट्र)
श्रीमती रानी दुलानी,न.-028847991
9029643708,10-बी/बी, वाईसराय
पार्क,ठाकुर विलेज कान्दीवली,मुम्बई

श्री प्रेम सागर गुप्ता ,मो. 9323101733
सी-5, राजविला, बी.पी.एस. 2
क्रोस रोड़,वेस्ट मुलुंड, मुम्बई

हजारीबाग(झारखण्ड़)
श्री डूंगरमल जैन,मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र,
मेन रोड़ सदर थाना गली,
हजारीबाग (झारखण्ड़)

धनबाद(झारखण्ड)
श्री भगवानदास गुप्ता-09234894171
07677373093 गांव-नापों खुर्द,पो.-
गोसाई बलिया,जिला-हजारीबाग (झारखण्ड)

रामगढ़(झारखण्ड)
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी,मो. 7992262641,
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट
राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़ (झारखण्ड)

डोडा (झारखण्ड)
श्री विक्रम सिंह व नीलम जी कोतवाल
मो. 09419175813, 08082024587
ग्वाड़ी, उदराना, त. भद्रवा, डोडा (ज.क.)

हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिघरी, त. बदसर
जिला हमीरपुर - 176040 (हिमाचलप्रदेश)

श्री रसील सिंह मनकोटिया
मो. 09418061161
जामलीधाम, पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

शाहदरा शाखा
श्री विशाल अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क,
D.C.B. ऑफिस के पास,शाहदरा,ईस्ट दिल्ली

मथुरा(उ.प्र.)
श्री दिलीप जी वर्मा
मो. 08899366480
1, द्वारिकापुरी,कंकाली, मथुरा (उ.प्र.)

बरेली (उ.प्र.)
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074,विकास पब्लिक
स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई)
जिला - बरेली- (उ.प्र.)

भदोही(उ.प्र.)
श्री अनूप कुमार बरनवाल, मो.7668765141,शिव मन्दिर के
पास, मैन मार्केट, खमरिया, जिला भदोही, (उ.प्र.) 221306

हाथरस (उ.प्र.)
श्री दास बृजेन्द्र,मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन,सादाबाद

बरेली(उ.प्र.)
श्री विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449,मकान नं.22/10,
सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी
बरैली (उ.प्र.)

हापुड़ (उ.प्र.)
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,कबाड़ी बाजार,हापुड़

दीपका, कोरबा (छ.ग.)
श्री सूरजमल अग्रवाल,मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू,मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको
नगर, जिला-कोरबा (छ.ग.)

बिलासपुर(छ.ग.)
डॉ. योगेश गुप्ता,मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2,
शान्ति नगर, बिलासपुर (छ.ग.)

बालोद (छ.ग.)
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000,रामदेव चौक
बालोद, जिला-बालोद (छ.ग.)

खरसिया(छ.ग.)
श्री बजरंग बंसल,मो.-09329817446
शान्ति ड्रेसेज, नियर चन्दन तालाब
शनि मन्दिर के पास,खरसिया (छ.ग.)

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,मो.-09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी
अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

सम्पादकीय

मनुष्य का मनुष्य से क्या रिश्ता है? क्या हमारे रक्त – संबंध के रिश्ते ही होते है या और भी ? इन बातों का उत्तर हमारे शास्त्रों, शास्त्रकारों तथा उपदेशकों ने अनेक बार अपने–अपने ढ़ंग से दिये हैं। उनकी मानें, मन की मानें, मानवता की मानें तो मनुष्य का मनुष्य का नाता रिश्ता आत्मीयता का है। हम यह तो स्वीकार करते हैं कि एक ही परमात्मा ने हमें जन्म दिया है, उसी ने हमारा पालन पोषण का दायित्व भी वहन किया हुआ है। हम उसे परमपिता के नाम से भी संबोधित करते हैं। जब हम सभी मनुष्य एक ही पिता का संतान है तो परस्पर बहुत ही गहरा रिश्ता बन गया है।

ऐसी दशा में हम जरा सोचें कि दुनिया के सभी ईंसान मेरे अपने हैं। भ्राता हैं। चाहे वे किसी भी धर्म, भाषा या संस्कृति के मानने वाले ही क्यों न हों। चाहे वे कितने ही सम्पन्न हों, विपन्न हों, स्वस्थ हों या असहाय हों, है तो हमारे भाई ही। हमारा भाई सुखी हैं तो हमें प्रसन्नता होती ही है। तो उसके संकट में भी हमारा विचलन होना और उसकी सहायता के लिये तत्पर होना स्वाभाविक होना ही चाहिये तभी वसुधैव कुटुम्ब का भाव साकार हो सकेगा।

कुछ काव्यमय

मानव है मानव का भाई
फिर क्यों है संकोच ?
केवल अपना ही मैं देखूं
यह तो गंदी सोच।
मेरा भाई रहे दुखी तो।
मुझे कहाँ सुख होगा।
भाईचारा ठीक निभे जब
मिलकर दुःख भगेगा।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

संस्थान के दैनिक निःशुल्क सेवा कार्य

1. निःशुल्क दैनिक भोजन सुविधा।
2. निःशुल्क दिव्यांग ऑपरेशन।
3. निःशुल्क केलिपर्स का वितरण
4. निःशुल्क फिजीयोथेरेपी सुविधा।
5. आवासीय विद्यालय के माध्यम से मानसिक मूकबधिर व्यक्तियों को शिक्षण और प्रशिक्षण सुविधा।
6. निःशुल्क मरीजों की चिकित्सकीय जाँच
7. अनाथ बालकों हेतु आवास, शिक्षा आदि सुविधा।
8. निःशुल्क नारायण मोड्यूलर कृत्रिम अंग वितरण।
9. संस्थान द्वारा संचालित निःशुल्क रोजगार परक गतिविधियां।

अपनों से अपनी बात

सकारात्मक सोच

एक बहुत ही प्यारा शब्द है अगर हम उस शब्द की सार्थकता को अपनी जिन्दगी में उतार लें तो यकीन मानिए जिन्दगी बहुत आसान हो जाएगी.....

जी हाँ 'सकारात्मक सोच' जीवन हमारा विचारों से ही बना है, हम जिस तथ्य को जिस विचार से देखेंगे आप पाएंगे कि आपके विचार ही आपको सुखी या दुःखी कर रहे हैं.....

स्वयं को पूर्णतया सकारात्मकता की तरफ देखना चमत्कार की तरह नहीं हो सकता, इसके लिए अभ्यास की जरूरत रहेगी..... एक पल से शुरू कीजिए एक घंटे तक ले जाइए एक दिन पूरा.... सभी कुछ सकारात्मक सोचिए अपनी आदत में डालिए..... देखिए जीवन इतना प्यारा इतना आसान पहले कभी नहीं था....

पोलियो हॉस्पीटल का जब भी एक चक्कर लगाता हूँ मरीजों के पैरों में लोहे की छड़े डाली हुई हैं, निश्चित

रूप से इस वैज्ञानिक युग में भी उन लोहे की छड़ों ने अपना एहसास एक इन्सानी बदन में जरूर दर्द के रूप में दिलाया होगा परन्तु देखता हूँ, एक मरीज अपनी मां से बहुत हँस कर बात कर रहा हे कभी–कभार ठहाकों की आवाज भी सुनाई देती हैं.....

मैंने उस मरीज से पूछा बेटा दर्द नहीं होता क्या .....तो जवाब में फिर उसी मुस्कराहट के साथ बोलता है, बाऊजी परन्तु अपने पैरों पर चलने की बात सोचता हूँ तो दर्द स्वतः ही कम महसूस होने लगता है.... उस गरीब अशिक्षित दिव्यांग मरीज की सोच कभी हम शिक्षितों को भी बौना कर देती है जो छोटी सी परेशानी से निराश हो जाते हैं....

निवेदन है आपसे, जब भी आप खुद को तनाव में पायें या लगे कि हो रही है मुश्किल आगे बढ़ने में, या हो ईश्वर से शिकायतें, या लगे हे भगवान ! ये इतना बुरा मेरे साथ ही क्यों होता है...

तो आइए "नारायण सेवा संस्थान" के पोलियो हॉस्पीटल में, मिलिये पोलियो पीड़ित दिव्यांगों से, उन मासूम बच्चों से जिन्हें सिर्फ हँसना या सिर्फ रोना आता है.....

आपको तनाव से राहत मिलेगी, व मिलेगी मुश्किलों में भी आगे बढ़ने की प्रेरणा .....व ईश्वर से भी कोई शिकायत नहीं रहेगी...

खुद को दुनिया का सबसे खुशकिस्मत इंसान सिर्फ आप ही बना सकते हैं... अपनी सोच को सकारात्मक बनाकर....

— कैलाश 'मानव'

जो ए.टी.एम. मशीन पैसा नहीं दे, उसमें अपना पैसा कौन डालेगा ?

सेठ राम किशोर जी के पास धन एवं रुपये पैसे का अकूत खजाना था। रुपया इतना कि रखने तक की घर में जगह नहीं। सेठ जी ने सारा रुपया बैंक में डलवा दिया और अपने नाम का ए.टी.एम. कार्ड बनवा दिया। अब सेठ जी निश्चिंत कि उनका पैसा सुरक्षित जगह पर पहुँच चुका था। न कोई रुपया गुम हो जाने का डर और न रकम डूबने का भय। सेठ जी आराम का चिन्तामुक्त जीवन जीने लग गये।

जब सेठ जी को जरूरत होती, अपना ए.टी.एम. कार्ड लिया और रुपया निकला लेते। धीरे–धीरे अवस्था बदलती गई। सेठ जी वृद्ध हो चुके थे। अब सेठ जी कभी चैक भिजवा कर पैसा निकलवाते तो कभी अपने मुनीम को अपना कार्ड देकर भेजते। मुनीम पैसा ले आता। सेठ जी कभी अपने भाई, अपने लड़कों, अपनी लड़कियों, अपने दामाद, अपने रिश्तेदारों में से कोई भी मिलता, उससे पैसा निकलवाकर मंगवा लेते काम बड़ा आराम से चल रहा था।

एक बार सेठ जी ने अपने मुनीम को ए.टी.एम. देकर भेजा। मशीन ने पैसा नहीं निकाला.....फिर अपने लड़के को देकर भेजा, फिर भी मशीन ने पैसा नहीं

निकाला.....फिर लड़की, दामाद, पोते, पोती सभी को भेजा लेकिन मशीन का वही का वही हाल। आखिर सेठ जी स्वयं ए.टी.एम. कार्ड लेकर गये पर मशीन से पैसा नहीं निकला। यह खबर एक से दो, दो से चार, चार से दस, बीस, सौ और हजारों लोगों तक हवा की तरह फैल गई, जिन लोगों ने उस बैंक के ए.टी.एम. कार्ड ले रखे थे, वे सभी पहुँच गये बैंक में और देखते ही देखते सभी ने अपने खाते उठा लिये। बैंक बदनाम हो चुका था। अब उस बैंक पर किसी को विश्वास नहीं था।

क्या हम भी ऐसी बैंक तो नहीं बन रहे हैं, जिससे उपभोक्ताओं का विश्वास उठ रहा हो.....

जी हाँ, हम भी एक ए.टी.एम. की मशीन ही हैं, जिसमें परमात्मा ने अपना पैसा रख रखा है, वह कभी ए.टी.एम. देकर असहाय को, कभी गरीब को, कभी बीमार को, कभी निःशक्त को, कभी निराश्रित को कभी भूखे, प्यासे को तो कभी दुर्बल अवस्था लिए उस वृद्धजन को हमारे पास अपना ए.टी.एम. कार्ड देकर भेजता है।

यदि उस समय हम ए.टी.एम. पैसा निकालते हैं तो हम पर परमात्मा का पूरा विश्वास है। वह और भी धन दे सकता है और यदि हमने उसके प्रतिनिधियों को नकारा है उसका चैक बाउन्स किया है तो वह कभी भी अपनी जमा पूंजी निकलवा सकता है।

यदि बैंक की साख बढ़ेगी तो जमाकर्त्ताओं का विश्वास बढ़ेगा। आइए, उस जमाकर्त्ता को राजी रखने का पूरा प्रयास करें, बैंक की ए.टी.एम. पैसा देती रहेगी तो जमाकर्त्ताओं का विश्वास भी बढ़ता रहेगा। जमाकर्त्ता किसके नाम का चैक बनाये यह उसके अधिकार की बात है, किसी बैंक या ए.टी.एम. मशीन का यह अधिकार नहीं कि जमाकर्त्ता द्वारा भेजे प्रतिनिधि को धन के लिए मना कर दे।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

हैदराबाद जाने से भी कोई लाभ नहीं हुआ तो किसी ने आयुर्वेद की शरण में जाने की सलाह दी। कोच्ची में आयुर्वेद का प्रमुख संस्थान था। अब वहां गया। आयुर्वेद की पारम्परिक विधियों से उसकी आंख का उपचार शुरू हो गया, प्रक्रिया लम्बी थी, मगर अन्य कोई विकल्प नहीं भी नहीं था। यहां उड़द के आटे में हल्की सी गर्म औषधि भरकर एक पट्टी बनाई जाती, यह पट्टी उसकी आंख पर लगा दी जाती। आंख में जब यह दवा पूरी भर जाती तो रूई से वापस निकाला जाता। लगभग तीन महीने तक यह उपचार चला मगर कोई लाभ नहीं हुआ।

कोच्ची से वह उदयपुर लौट आया, अब तक यह बात फैल चुकी थी। उसका सम्पर्क क्षेत्र विस्तृत था, अपने व्यवहार से उसने सबको प्रभावित किया था। जिस किसी ने यह खबर सुनी, उसे यकीन नहीं हुआ। हर कोई कैलाश से मिलना चाहता था मगर अभी वह डॉक्टरों के कड़े निर्देशों के अन्तर्गत किसी से नहीं मिल रहा था। सारा मामला संक्रमण का था, इसे किसी भी हालत में और बढ़ने का कोई मौका नहीं देना जरूरी था। उदयपुर में कुछ दिन रह, दिल्ली में एम्स अस्पताल में परीक्षण कराया, फिर चंडीगढ़ के पी. जी. आई. में बताया। सब यही कहते हैं कि आंख की नसें तो ठीक काम कर रही हैं मगर रोशनी नहीं है। किसी ने बताया कि इंग्लेण्ड की बर्मिघम यूनिवर्सिटी में कोई शोध चल रही है, वह सफल हो गई तो आपके चश्में पर लग जायेगी, उसके बाद सब दिखने लग जायगा।

अंश-244

पीतल के घड़े स्वास्थ्य के लिए होते हैं लाभदायक

पुराने समय में पानी को पीतल के बर्तनों में भरकर रखा जाता था किंतु अब सस्ती प्लास्टिक की बोतलों ने महंगे पीतल को पीछे छोड़ दिया है। ऐडिनबरा में आयोजित सोसायटी फार जनरल माइक्रोबॉयलोजी की बैठक में वैज्ञानिकों ने बताया कि उनके शोध के अनुसार पीतल के घड़ों में जीवाणु नहीं पनपते। वैज्ञानिकों ने पीतल और मिट्टी के घड़ों में पानी भर कर इनमें कोलाई बैक्टीरिया के बीज डाले। यह जीवाणु पेचिश पैदा करने वाला सूक्ष्मजीवी हैं। शोधकर्ताओं ने 24 और 48 घंटे बाद इन जीवाणुओं की गिनती की। नतीजे चौंकाने वाले थे। पीतल के घड़े में जीवाणुओं की संख्या समय के साथ घटती चली गई और 48 घंटे बाद इनकी संख्या इतनी घट गई कि इन्हें गिना जाना संभव नहीं रहा। शोधकर्ताओं के अनुसार इन जीवाणुओं के नष्ट होने के कारण पीतल में पाया जाने वाला तांबा है जो पानी में घुलकर इन जीवाणुओं को नष्ट कर देता है। तांबे की मात्रा इतनी कम होती है कि वह शरीर को नुकसान नहीं पहुंचाती। अतः संभव हो सके तो पीने का पानी पीतल के घड़ों में रखें।

खुशियों की बहार आई

मेरा नाम सोनू, उम्र 13 वर्ष है। मेरे पिता जी श्री प्रभुनाथ जी है। हम जिला सिवान बिहार के निवासी है। मेरे दोनों पैरों में पोलियो हो गया है। मेरे पिताजी ने मेरा काफी जगहों पर इलाज करवाया पर कहीं से भी विश्वास पूर्ण जवाब नहीं मिला।

एक दिन मैं सड़क पर घिसटते हुए चल रहा था कि एक व्यक्ति ने मुझे बोला कि तुम नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में चले जाओ, और वहाँ पर निःशुल्क ऑपरेशन किया जाता है। मैं उससे संस्थान का पता लेकर घर गया, और घर वालों को बताया। मेरे पिता जी मुझे संस्थान में लाये। मेरे पैरों का ऑपरेशन हो गया। मैं अब अपने पैरों पर खड़ा हो सकता हूँ। मेरे जीवन में एक खुशी की बहार आ गयी है।

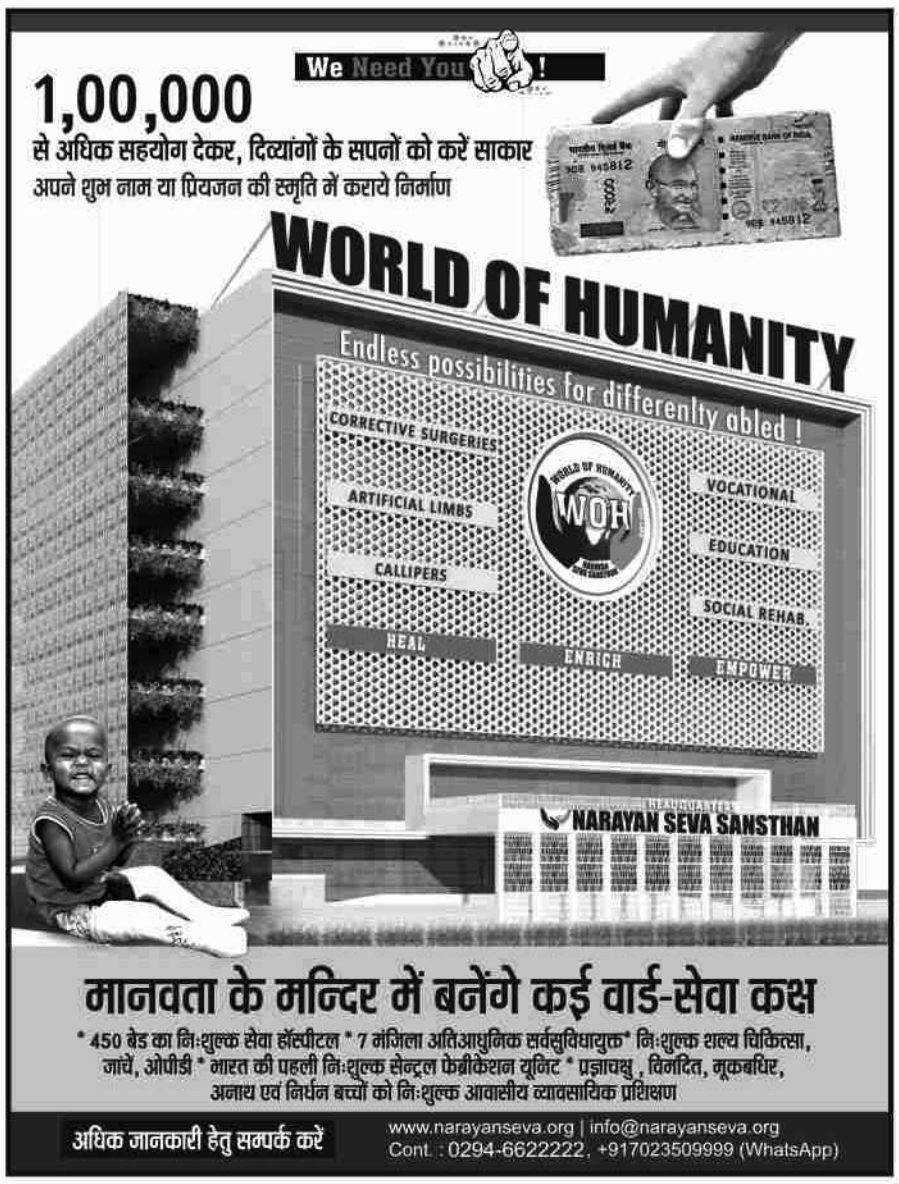

अनुभव अमृतम्

व्यक्ति नहीं बदलेंगे। आये चले गये। हानि–लाभ, जीवन–मरण, यश–अपयश विधि हाथ। मेरे एक मित्र बहुत छोटी उम्र में चले गये। शांतिलाल उन्हीं के छोटे भाई धनपाल जी जो आये थे अभी। उनके एक भाई और है वो भी 80 साल के हो गये। उनकी भी मृत्यु हो गई। उनके सबसे बड़े भाई थे शांतिलाल जी बडाला शहर में एक बड़ा दरवाजा, बड़ा गेट अन्दर के साईड में थाना, एक तरफ उस गेट से निकलकर के बाहर जाते थे। जाते है बांयीं साईड़ में एक नाई की दूकान जहाँ बाल की कटिंग करवाने भी जाते थे। उसके ठीक उसी लाईन में आगे शांतिलाल जी के पिताजी की दूकान बिस्कुट है, नमक। शांतिलाल जी चले गये 15 साल की उम्र में मेरे गहरे मित्र 9वीं में हम साथ पढ़ते थे। टाईफाइड हुआ। स्वर्गवास हो गया। ये शरीर भी साथ छोड़ेगा।

कितना बयां करुं मैं,
इस दुनियाँ की अजब गति।
चन्दन आना और जाना है,
फर्क नहीं है राई रति।।
नेक कमाई की है जिसने,
बस उसकी ही खरी रही।
परदेशी तो हुआ रवाना
प्यारी काया पड़ी रही।।

सेठजी के कलम कान पर टंगी रही। वकील साहब की कल की पेशी पड़ी रही। वारन्ट कट गया। सेठजी को साइलेन्ट अटेक आ गया।

जेन्टलमेंन एक वक्त को,
शाम शहर को जाता था।
पाँच –चार थे दोस्त साथ में,
बातें बहुत बनाता था।।
लगी जो ठोकर गिरे बाबूजी,
लगी हाथ में घड़ी रही।
परदेशी तो हुआ रवाना,
प्यारी काया पड़ी रही।।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 124 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।
संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023